स्नातक-हिन्दी-प्रतिष्ठा-खण्ड-तीन

समकालीन कहानी

(वस्तुनिष्ठ/लघुत्तरीय)

– डॉ॰ मुन्ना साह

1. नयी कहानी के प्रवर्तक — राजेन्द्र यादव, मोहन राकेश, कमलेश्वर (तीनों प्रसिद्ध हैं)

2. साठोत्तरी कहानी को गंगा प्रसाद विमल ने प्रारम्भ में 'समकालीन कहानी' के नाम से पुकारा, किन्तु शीघ्र ही 'अ-कहानी' की व्याख्या करना आरम्भ कर दिया।

3. कथाकार मार्कण्डेय ने लिखा है, "नयी कहानी से हमारा मतलब उन कहानियों से है जो सच्चे अर्थों में कलात्मक निर्माण है, जो जीवन के लिए उपयोगी हैं और महत्वपूर्ण होने के साथ ही उसके किसी न किसी नए पहलू पर आधारित हैं।"

4. सहज कहानी के सम्बन्ध में अमृतराय ने लिखा है, "कहानी का लक्ष्य अपने कहानीपन को न खोकर जीवन की प्रस्तुति सहज रूप में करते हुए जीवन के कटु सत्यों और व्यवस्था की भ्रष्टता को उजागर करना है।"

5. 'समान्तर कहानी' आन्दोलन में 'आम आदमी' को प्रतिष्ठित करने पर बल दिया जाता है।

6. राकेश वत्स ने लिखा है, "सक्रिय कहानी का सीधा और स्पष्ट मतलब है कि चेतनात्मक ऊर्जा और जीवन्तता की कहानी।"

7. वैचारिक धरातल पर जनवादी कहानी मार्क्सवाद को आधार बनाकर चलती है। इसमें मुख्यतः किसानों-मजदूरों, पिड़ितों, दलितों और असहायों का जीवन-संघर्ष चित्रित किया जाता है।